ੴ वाहिगुरु जी की फतहि ।।

"शुभ करमन ते कबहूं न टरों ।।"

गुर सिखी बारीक है सिल चटणु फिकी ।
त्रिखी खंडे धार है, उह वालहु निकी ।।

मुझे सिखी क्यों प्यारी लगती है ?

प्रकाशक

सिख बुक सैंटर

गुरु गोबिन्द सिंघ स्टॅडी सर्कल

माडल टाऊन एक्सटैन्शन, लुधियाना - 141 002

द्वितीय संस्करण - जनवरी 2000 मूल्य 1 रुपया

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

नितनेम

हर सिख के लिए प्रतिदिन कम से कम इन बाणियों का पाठ करना या सुनना जरूरी है। अमृत वेले - जपुजी साहिब, जापु साहिब, सवैये (स्रावग सुध वाले), सायंकाल - रहिरास साहिब तथा सोते समय - सोहिला जी । इसके अतिरिक्त अन्य जितनी भी अधिक से अधिक बाणियों का पाठ समयानुसार किया या सुना जा सके, अच्छा है।

गुरसिख विकारों से रहित है

हउ तिसु घोलि घुमाइआ, गुरमति रिदै गरीबी आवै ।
हउ तिसु घोलि घुमाइआ, पर नारी दे नेड़ि न जावै ।
हउ तिसु घोलि घुमाइआ, पर दरबै नो हथु न लावै ।
हउ तिसु घोलि घुमाइआ, पर निंदा सुणि आपु हटावै।
हउ तिसु घोलि घुमाइआ, सतिगुरु दा उपदेश कमावै ।
हउ तिसु घोलि घुमाइआ, थोड़ा सवै थोड़ा ही खावै ।
गुरमुखि सोई सहजि समावै ।

प्यारे खालसा जी,

आपके पवित्र चरणों में विनती है कि आप सिखी आचरण, नैतिक मूल्य,शूरवीरता तथा आध्यात्मिकता का न्यारा रूप दुनिया के सभी स्वार्थों से ऊंचा रखना । पंथक अपमान, कभी न भूलना।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

https://archive.org/details/namdhari

तपदा परउपकार नो ठंडे परउपकार विहाणी ।।
अगनि बुझाइ तपति विचि ठंडा होवै बिलम न आणी ।।
गुरसिखी दी एह नीसाणी ।

मुझे सिखी क्यों प्यारी लगती है ?

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की ईश्वरी बाणी १झ से शुरू होती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि परमात्मा एक है जो हर समय मेरे साथ होता है, उसका सिमरन करने के लिए मुझे किसी रीति-रिवाज या रस्मों के चक्कर में नहीं पड़ना पड़ता। उसे प्रत्यक्ष रूप से देखने व ढूंढने के लिए किसी विशेष दिशा की ओर मुंह नहीं करना पड़ता। किसी विशेष स्थान पर जाने की ज़रूरत नहीं। मैं केवल उसे व उसके गुणों को याद करता हूं तथा याद करते ही वह मुझे प्रत्यक्ष रूप में मेरे पास खड़ा दिखाई देता है। यह ज्ञान मुझे सिखी से मिला है इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

मुझे हर प्रकार के दिशा-निर्देश व उच्च जीवन प्रणाली की सूझबूझ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में से मिल जाती है तथा ये एक मात्र ऐसे आध्यात्मिक श्रोत है, जिसमें से हमेशा ही ज्ञान रूपी धारा बहती रहती है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में केवल इस दुनिया का ही ज्ञान नहीं है, बल्कि परलोक का भी ज्ञान भरा हुआ है। रस से परिपूर्ण राग व आध्यात्मिक खुराक मेरी भटकती आत्मा को सुखी रखते है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की ईश्वरीय बाणी का नूर ही ऐसा है जिस कारण मुझे सिखी प्यारी लगती है।

मेरे गुरु जी महान योद्धा है। उनकी शूरवीरता, बहादुरी व कुरबानी के बराबर कोई उदाहरण नहीं मिलता। वे बख्शीशों के मालिक तथा अपने प्यारों की सहायता करने वाले है। उन्हें जब भी कोई सच्चे दिल से याद करता है, वे उसकी सहायता करते है। जब भी कभी मै मायूस हो जाता हूँ, मुझे कोई भी मित्र, सम्बन्धी आदि सहायता न करता दिखाई पड़े तथा मुझे अत्यन्त मुश्किलें व ख़तरों का सामना करना पड़े तो मै सर्वशक्तिमान व समर्थ गुरु

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जी का ध्यान करता हूं। आप यह पढ़ कर आश्चर्यचकित होंगे कि वह सच्चा व समर्थ गुरु उसी समय मेरी सहायता करने के लिए पहुंच जाता है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

प्रतिदिन अरदास करते समय मुझे चार चीजें मांगने की प्रेरणा मिलती है। पहली - परमात्मा का पवित्र नाम जपना, दूसरी - चढ़दी कला में रहना, तीसरी - ईश्वरीय आदेश को प्रसन्नचित होकर स्वीकार करना, चौथी - सरबत का भला मांगना। इन मानवीय कल्याण वाली दृष्टि के लिए ही मुझे सिखी प्यारी लगती है।

मेरी कौम एक स्वाभिमानी कौम है, यह गुलामी का जीवन जीने की अपेक्षा शूरवीरों वाली मौत को प्राथमिकता देती है। हँस-हँस कर चरखड़ियों पर चढ़ जाना, बंद-बंद (अंग-अंग) कटवा लेने, खोपड़ियाँ उतरवा लेनी, देगों में उबाले जाना, बच्चों के टुकड़े-टुकड़े करवा कर गले में हार डलवा लेने, इन्जनों के नीचे कुचले जाना तथा फांसी के रस्सों को चूम-चूम कर अपने गलों में डाल लेना इनके लिए मामूली सी बात है। हर प्रकार की कुरबानी देनी, वह भी हँस हँस कर, ये परमात्मा की कृपा समझते हैं। मौत को मजाक करना इनकी आदत है। सिख सुबह व शाम की अरदास में शहीदों की याद को दुहराते है तथा अपने अन्दर शहीद होने की भावना को पैदा करने की याचना करते है। इस पवित्र शहीदी व शूरवीरता वाली भावना के कारण मुझे सिखी प्यारी लगती है।

सिख को जब अमृत की प्राप्ति होती है तो उसके अन्दर फौलाद जैसी शक्ति पानी जैसी निर्मलता तथा शहद जैसी मिठास पैदा हो जाती है तथा वह अपने अन्दर एक उत्तम व्यक्ति की तरह 'मानवता' का अनुभव करना शुरू कर देता है। उसे यूं लगना शुरू हो जाता है जेसे कि उसके अन्दर कलगी वाले पातशाह की ज्योति जल रही है। 'सिंघ' को अपना स्वरूप गुरु जैसा लगने लग जाता है। 'सिख' से 'सिंघ' बनाने वाली सिखी मुझे प्यारी लगती है।

जहाँ अन्य देशों व धर्मों में हुए विवाह, लड़ाई-झगड़े के कारण

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

जल्दी ही तलाक तक पहुंच जाते है, वहां मेरे धर्म में मेरे गुरु (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी) की उपस्थिति में किया गया आनन्द कारज (विवाह) सबसे अधिक सफल रहता है। हमारे धर्म में लड़के व लड़की को प्राय: माता पिता ही चुनते है। विवाह के उपरान्त लड़के व लड़की, दोनों के दुख-सुख, कार्य व लक्ष्य एक जैसे हो जाते है। यहां तक कि यदि एक की सेहत ठीक न हो तो दूसरे को चिन्ता हो जाती है, यदि एक को कोई खुशी मिली तो दूसरा उससे भी अधिक खुश, यदि एक को किसी दुख ने घेर लिया तो दूसरे द्वारा दुख दूर करने का भरसक प्रयत्न। सही अर्थों में इसे ही संयोग कहते है तथा ये सुन्दर संयोग इस प्यारी सिखी में से ही मिलते है, इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

मेरे सिर पर लम्बे केश तथा चेहरे पर गुरमुखों वाली दाढ़ी, मुझे हजरत ईसा, हजरत मुहम्मद साहिब, श्री राम, श्री कृष्ण, शिव जी, बाल्मीकि तथा अन्य अनेक ऋषियों, पैगम्बरों की सुन्दरता का प्रत्यक्ष स्वरूप बना देती है। इसके अलावा मै स्वयं को दुनिया का न्यारा पहलवान समझने लग जाता हूं, जिसके हाथ में कृपाण है, जो दुनिया की रक्षा करता है। जो अबलाओं का अपमान नहीं होने देता तथा यही सिखी स्वरूप ही मेरे देश को तथा मेरे भाइयों को दुश्मनों से बचाता है। 'राज' व 'योग' दोनों मुझे इस सिखी में से मिले हैं। मुझे सन्त सिपाही के नाम से पुकारा जाता है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

केश मुझे प्रकृति से मिले है तथा इनकी सफाई के लिए मै कंघा रखता हूं। सभ्यता के अनुकूल तथा स्वयं पर नियन्त्रण रखने के लिए 'कच्छहरा' पहनता हूं। दुश्मनों से मुकाबला करने के लिए कृपाण को अंग-संग रखता हूं। एक लोहे का कड़ा अपने हाथ में पहनता हूं, जिसे देखकर मुझे अपना गुरु याद आ जाता है। यह कड़ा मेरे हाथों को कोई भी बुरा काम करने से रोकता है। इतनी लाभदायक व व्यक्ति को सच्चा, मानव बनाने वाली रहत (जीवन प्रणाली) का मै धारक हूं, इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

मेरे गुरु ने श्रम करके धन कमा कर खाना सिखाया। चाहे हल चलाता होऊँ, दुकान पर बैठा होऊँ या सड़क पर काम करत होऊँ, या फिर किसी कार्यशाला, कार्यालय या सेना में काम करता होऊँ, मै अपने धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकता हूँ, तथा वाहिगुरु का मनन कर सकता हूँ। मै घर में होऊँ या बाहर, समाज में रहूं या युद्ध के मैदान में, मेरे ख्यालों में, मेरे कार्यों में, मेरे व्यापार में, मेरी बोलचाल में, मेरे जीवन के हर क्षेत्र में से मेरी सिखी टपक रही होती है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती हे।

मै अपने गुरु के आदेश के अनुसार नित्यप्रति पांच बाणियों का पाठ करके अपने अन्दर लगी मैल को धो लेता हूँ। हम, बड़े व छोटे, लंगर छकने के लिए एक ही पंक्ति में बैठते है। एक ही बाटे में अमृत छकते है। हम मड़ियों, टोनों, ताबीज़ों, यन्त्रों-मन्त्रों को नहीं मानते तथा न ही तथाकथित व्रत रखकर शरीर को कष्ट देते है बल्कि हमेशा ही थोड़ा खाते तथा थोड़ा सोते है। अपनी अपनी आय का दसवन्ध (दसवां भाग) निकालकर मानव कल्याण के कार्यों में खर्च करते है। ऐसे सच्चे तथा पवित्र गुणों का मै धारक हूं, इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

मुझे अपनी गल्तियों व भूलों की क्षमा मांगने के लिए किसी के पास जाने की आवश्यकता नही, मै अकेला खड़ा होकर अपनी गल्तियों/भूलों की क्षमा परमात्मा से माँग लेता हूँ। वह सच्चा सतिगुरु मेरी अरदास सुन लेता है। जब हम एकत्र होकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के सम्मुख बैठते है, गुरबाणी पढ़ते व सुनते है, मिल कर गाते है, गुरु यश में लीन हो जाते है, फिर इतने लीन हो जाते है कि हम अपने गुरु के साथ एकरस हो जाते है। फिर मन को गुरु चरणों में टिका कर अरदास करते है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

जब मैं सुबह अमृत वेले उठता हूँ, एकान्त में परमात्मा के नाम के साथ जुड़ता हूँ तो उस समय मैं मौलवी, पंडित या पादरी की तरह होता हूँ। जब मै गुरुद्वारे जाकर साध-संगत के जोड़े झाड़ता हूँ, गुरु के लंगर के जूठे बर्तन मांजता हूँ तो सेवक रूप होकर शूद्र का कार्य करता हूँ। सेवा से मुक्त

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

https://archive.org/details/namdhari

होकर जब मै किरत (श्रम) करता हूँ, स्वयं खाता हूँ, परिवार को खिलाता हूँ, सरबत के भले के लिए दसवन्ध (आय का दसवां भाग) निकालता हूँ तो उस समय मैं वैश्य के रूप में होता हूँ। जब मेरे देश, धर्म व मानवता पर कोई विपत्ति आन पड़ती है तो मैं अपने गुरु द्वारा बख्शी कृपाण लेकर युद्ध के मैदान में उतर आता हूँ, उस समय मैं एक बहादुर क्षत्रिय होता हूँ। साहिबे कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपा से मेरे अन्दर चारों वर्णों के गुण है। इसीलिए मैं एक सम्पूर्ण व्यक्ति हूँ और इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

दुनिया के हर धर्म की पवित्र पुस्तकों में केवल उस धर्म की अपनी ही रचनाएं हैं। अन्य किसी धर्म को मानने वालों की रचनाओं को इन पुस्तकों में स्थान नही दिया गया। संसार भर में मात्र एक ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी ही है, जिनमें गुरु साहिबान के अतिरिक्त उस परमात्मा के प्रिय भक्तों, भट्टों व अन्य गुरसिखों (चाहे कोई जुलाहा है या चमार या फिर कसाई, चाहे कोई नीच जाति से है या उच्च जाति से है, चाहे कोई हिन्दू है या मुस्लमान) की बाणी अंकित करके अपने साथ सिंहासन पर बैठाया है। ऐसी सर्वसांझीवालता मुझे केवल यही मिलती है, इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

मैने देखा है, अन्य मतों वाले जिनकी अपनी धार्मिक पुस्तकें संस्कृत, अरबी, लेटिन, पाली व अंग्रेजी आदि भाषाओं में लिखी गयी है। यद्यपि उन भाषाओं को पढ़ना कठिन होता है तथापि उस धर्म के अनुयायी लगातार पढ़ते है, इधर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की भाषा अत्यन्त सरल है। थोड़ा सा मन एकाग्र करके पढ़ने से बहुत समझ आ सकती है। मैं बाणी को अन्धा धुंध नहीं पढ़ता, बल्कि बाणी को समझ-समझ कर पढ़ता हूँ तथा आनन्द प्राप्त करता हूँ, जिसका वर्णन नही किया जा सकता। इतने बड़े भण्डार के रचयिताओं की सिखी मुझे प्यारी लगती है।

जब पुत्र की कुरबानी देने के लिए ख़ुदा की ओर से आदेश हुआ तो पैगम्बर अपने प्यारे पुत्र की कुरबानी अपनी आंखों से नही देख सके तथा यह आदेश देते है कि मेरी आंखों पर पट्टी बाँध दो । परन्तु वह, कलगीधर

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

https://archive.org/details/namdhari

पातशाह ! आप तो कुरबानी की सीमाएं भी पार कर जाते हैं। युद्ध के मैदान में एक-एक सिख सैकड़ों को समाप्त करके शहीद हो रहा है, अपने साहिबजादों को अपने हाथों से शस्त्र सजा कर युद्ध के मैदान में भेजते हैं। जब पुत्र शत्रुओं से लड़ रहा होता है तो पिता यह दृश्य देखकर वाह-वाह करते हैं तथा पुत्र को शाबासी देते हैं। साथ ही दूसरे पुत्र को भी अपने हाथों से सजाकर भेजते हैं। चारों साहिबजादों के शहीद हो जाने पर परमात्मा का धन्यवाद करते हैं तथा कहते हैं 'ऐ अकालपुरख ! आज तेरी अमानत अदा हुई है।' ऐसे सर्वस्वदानी सतिगुरु की कुर्बानियां न केवल मुझे सिख बना रहने के लिए अपितु सारी दुनिया को यह प्यारी सिखी धारण करने की प्रेरणा देती रहती है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

कहते हैं कि सतयुग के समय में सत्य प्रधान था, त्रेता युग में यज्ञ आदि प्रधान थे, द्वापर के समय पूजा व पाठ प्रधान था, परन्तु कलयुग के समय में, जब कि मनोस्थितियाँ अनियन्त्रित है, चंचल है, साध-संगत व गुरबाणी का कीरतन ही एक मात्र साधन है, जिसके द्वारा मन की चंचलता को समाप्त कर नियन्त्रित किया जा सकता है। यह प्यारा, मीठा, रसपूर्ण, रागों से ओत-प्रोत गुरबाणी का पवित्र कीरतन मुझे केवल सिखी में ही मिलता है, इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

दुनिया की ओर जहाँ तक नजर जाती है, हर एक ने अपनी प्रशंसा, शोभा, मान-सम्मान व विजय ही मांगी है। हर देश में फतहि (विजय) के लिए अरदासें (विनतियां) की जाती हैं। देश के सभी वर्गों के लोग चाहे वे शासक हों या प्रजा या फिर युद्ध लड़ने वाले सिपाही, अपनी विजय के लिए उत्सुक रहते हैं। अपनी विजय हर किसी को प्यारी लगती है, परन्तु धन्य है गुरु गोबिन्द सिंघ जी, जिन्होंने हमें दिन-रात (चौबीसों घंटे) एक वाहिगुरु की फतहि कहनी ही सिखायी है। जब खालसा स्वयं इस वाहिगुरु का है तो फतहि भी उसी की ही होगी। अपने अहंकार को समाप्त करके अपनी टेक अकाल पुरख पर रखनी, इतना ऊँचा आदर्श मुझे सिखी में से ही प्राप्त हुआ है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

ईसाई मत की पवित्र पुस्तक अंजील (बाईबल) में लिखा है, ''यह तो सम्भव है कि एक ऊंट सुई के छोटे से छिद्र में से निकल जाए, परन्तु एक अमीर व्यक्ति कभी भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता।'' गुरु साहिब ने सिख को 'राज-योगी' बनाया है, बहुत ज़्यादा अमीर होने के बावजूद भी वह सिखी सिद्धान्तों पर चलता हुआ पूर्ण भक्त, योगी, ऋषि तथा तपस्वी बन सकता है। गुरु नानक देव जी के सिख महाराजा रणजीत सिंघ जी, जिनसे काबुल-कन्धार तथा हिन्दुस्तान के पठान भी काँपते थे, ने जब हरिमन्दिर साहिब श्री अमृतसर पर स्वर्ण पत्र चढ़वाने की सेवा की तो कारीगरों ने वहां लिख दिया कि ''सेवा महाराज रणजीत सिंघ ने करवायी।'' नित्यप्रति की दिनचर्या के अनुसार जब महाराजा रणजीत सिंघ दर्शनों के लिए आए तो उनकी दृष्टि उन अक्षरों पर पड़ी, गुस्से में आकर वे कहने लगे, ''मै कौन होता हूँ सेवा करवाने वाला, मेरा नाम यहाँ से मिटा दो।'' संगतों द्वारा बार-बार विनतियाँ करने पर उन्होंने यह वाक्य लिखवाने की स्वीकृति दे दी, ''गुरु महाराज ने अपनी कृपा दृष्टि से यह सेवा अपने सिख रणजीत सिंघ से करवायी।'' ऐसी नम्रता व निर्मलता सिखाने वाले गुरु की सिखी नया प्यार देती है, इसीलिए मुझे प्यारी लगती है।

गुरु साहिब के आदेशानुसार चलने वाला सिख भाई घनैय्या जब युद्ध में लड़ रहे शूरवीरों को बिना किसी भेदभाव के पानी पिलाए जा रहा था तो शिकायत होने पर उन्हें गुरु गोबिन्द सिंघ जी के सम्मुख पेश किया गया। सिक्खों ने गुरु जी को कहा कि भाई घनैय्या जी शत्रुओं को पानी पिला कर उन्हें फिर से युद्ध करने के योग्य बना देते है। इस पर भाई घनैय्या जी ने कहा ''हे सच्चे पातशाह ! आपकी शिक्षा के अनुसार मैं हर व्यक्ति में आपके ही दर्शन करता हूँ, आपने तो मुझे द्वेष भावना सिखायी ही नहीं। कलगीधर पातशाह खुश होकर अपने पास से मरहम की डिब्बी देकर कहने लगे, ''घनैय्या जी, पानी पिलाने के साथ-साथ घावों पर मरहम भी लगा दिया करो। ऐसे गुरु की सिखी मुझे अपने अच्छे कर्मों के कारण ही मिली है, इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

मेरे धर्म के अनुसार कुछ कर्म कुरहतों की श्रेणी में आते है, जिनमें से एक भी कर्म कर लेने से सिख, सिख नही रहता तथा जब तक वह पाँच प्यारों से दुबारा अमृत न छक ले, उसे सिख नही कहा जा सकता। इन कुरहतों में से पहली कुरहत है - केशों का अपमान करना अर्थात् केशों को कत्ल करना। आज दुनिया इतनी फैशनपरस्त हो गयी है कि वह केशों रूपी इस अनमोल ख़जाने, जिसे बुजुर्ग अत्यन्त सुरक्षित रखते थे, को संभालने की बजाय बिगाड़ने पर तुली हुई है। आज के फैशनपरस्त नौजवान ने इस मूल्यवान वस्तु को अपने से दूर कर शक्ति का एक श्रोत समाप्त कर लिया है। इससे नौजवान के मन में हर समय विकार पैदा होते रहते है तथा वह अच्छे कार्यों में समय व्यतीत करने की अपेक्षा बुरे कार्यों में ही लगा रहता है। दूसरी कुरहत है - कुठ्ठा यानी हलाल खाना अर्थात् मुसलमानी तरीके से तैयार किया गया माँस खाना। मुसलमान पशुओं को तड़पा-तड़पा कर कत्ल करते है तथा फिर उन का माँस खाते हैं। गुरु साहिब ने हमें ऐसे माँस का सेवन करने से वर्जित किया है। तीसरी कुरहत है - पर स्त्री या पुरुष का गमन करना। आज दुनिया 'काम' के लिए पागल हुई पड़ी है। जहां स्त्री को, पुत्री, बहन व मां समान समझना था, वहां 'काम' ने दुनिया को इतना अन्धा कर दिया है कि भले बुरे की पहचान ही नहीं रहती। चौथी कुरहत है - तम्बाकू का सेवन करना। आज दुनिया इस नामुराद बीमारी से बुरी तरह ग्रस्त है तथा भयभीत है। मुँह का स्वाद कुसंगत नहीं छोड़ने देता। यह बीमारी शरीर को घुन की तरह अन्दर से खा जाती है। परन्तु धन्य है मेरे गुरु जी जिन्होंने पहले ही हमें तम्बाकू का सेवन करने से सख्ती से मना कर दिया तथा कई सौ वर्ष पूर्व ही इस जगत जूठ तम्बाकू से हमें बचा लिया। मेरे गुरु जी ने ये चार पाबन्दियाँ लगाकर दुनिया को सीधा राह दिखाया तथा उच्च आचरण धारण करने की शिक्षा दी। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

सिखी में संगत को अत्यन्त महत्व व विशेषता प्राप्त है। विश्व के लगभग हर भाग में गुरुद्वारे बने हुए है। मन्दिरों, मस्जिदों व चर्चों आदि में केवल उस धर्म के लोग ही जा सकते है परन्तु गुरुद्वारों में हर धर्म, हर वर्ग,

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

हर देश के लोग बिना किसी भेदभाव के आ जा सकते हैं, वे यहाँ आकर कीर्तन सुनते हैं, सेवा करते है, लंगर छकते हैं व छकाते हैं तथा श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। यह सर्वसांझीवालता केवल गुरु घर में ही नजर आती है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

सिखी का सबसे बड़ा केन्द्रीय तीर्थ दरबार साहिब श्री अमृतसर है। पंचम पातशाह ने इसकी नींव मुसलमान सूफी फकीर मीआं मीर से रखवायी। गुरु गोबिन्द सिंघ जी की फौज में भी केवल सिख ही नहीं थे, बल्कि हिन्दू व मुसलमान भी गुरु जी की सेना में भर्ती हुए थे। पीर बुद्धुशाह ने अपने 700 सेवकों व अपने सभी पुत्रों को गुरु गोबिन्द सिंघ जी की फौज में भर्ती करवाया तथा अपने पुत्रों को शहीद करवा कर स्वयं को भाग्यशाली समझा। सभी लोगों को प्रिय तथा प्यारा बनना केवल सिखी ने ही सिखाया है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

मेरे गुरु ने दुख सुख में एक समान रहने की मात्र शिक्षा ही नहीं दी बल्कि ऐसा करके भी दिखाया है। प्यारे से प्यारा स्नेही मित्र या सम्बन्धी जब अकाल चलाना कर जाता है अर्थात् जब वह नश्वर शरीर को छोड़कर परलोक गमन कर जाता है तो उसके सम्बन्धी, रिश्तेदार व मित्र आदि उसके अंतिम संस्कार के बाद गुरुद्वारे जाते है, वहां कड़ाह प्रसाद की देग तैयार होती है, जिसे संगत में वितरित किया जाता है। इसमें भी एक राज छिपा हुआ है। कोई भी व्यक्ति अपने स्नेही की मृत्यु हो जाने पर मीठी चीज खाने को तैयार नहीं होता। परन्तु सिखी में ऐसा नही है। दुख व सुख को एक समान ही समझा गया है। दूसरी और जब किसी व्यक्ति को लम्बी प्रतीक्षा व आशाओं के बाद पुत्र की प्राप्ति होती है तो खुशी मनायी जाती है। रिश्तेदार, मित्र व सम्बन्धी आदि एकत्रित होते हैं। गुरु जी हमें उपदेश देते हैं कि जो पैदा हुआ है, उसने मर जाना है। राम व रावण जिनके इतने बड़े-बड़े परिवार थे, वे भी अन्त में बच न सके, मर गए। संसार एक स्वप्न है। जिस तरह पानी में से बुलबुला निकल कर उसी में समा जाता है, उसी तरह यह संसार स्थिर नहीं है, रेत की दीवार के समान है। यह बात मात्र फिलासफी ही नहीं है बल्कि

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

वास्तविकता है जो मुझे केवल इस प्यारे धर्म में ही मिलती है। इसीलिए मुझे सिखी प्यारी लगती है।

ज़रा सोचिए !

हम अपने आपको गुरु गोबिन्द सिंघ जी के ''सिंघ'' व ''सिंघनी'' कहलाते है ।

1. क्या हमने कभी अपने बच्चों को गौरवमयी इतिहास की जानकारी दी है ?
2. क्या हमने उन्हें सिखी सिद्धांतों के बारे में बताया है ?
3. क्या हमने कभी उन्हें दिल दहला देने वाली शहीदों की सच्ची गाथाएं सुनाई है ।
4. क्या हमने अपनी व्यस्त जिन्दगी में से थोड़ा सा समय निकालकर बच्चों को यह सिखाया है कि गुरुद्वारे जाते समय वहां कैसे बैठना है और कैसे व्यवहार करना है ?
5. क्या हमने कभी अपने बच्चों को कीरतन सिखाने, गुरबाणी शब्द कंठ करने की ओर कोई विशेष ध्यान दिया है ?

यदि नहीं, तो इन्तज़ार किस बात का ?
हमें इस दिशा में आज से ही प्रयत्न करने होंगे, तभी हम अपने बच्चों को सही अर्थों में ''गुरु गोबिन्द सिंघ जी के सिंघ तथा सिंघनियां'' बना सकेंगे ।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

सिख धर्म के मूल भूत सिद्धान्त

सिख धर्म एक ईश्वरवादी व एक अद्वैतवादी धर्म है। इसके अनुसार सृष्टि का कर्ता, पालनहार तथा संहार करने वाला केवल एक परमात्मा ही है। यह अवतारवाद का खण्डन करता है।

सिख केवल श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को ही अपना गुरु मानता है, किसी भी देहधारी को नहीं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें राम, हरि, ईश्वर, परमात्मा, अल्लाह, ख़ुदा, रहीम, केशव, बीठल आदि प्रभु के नाम सम्मिलित है।

सिख धर्म जात-पात, छुआ-छूत, ऊँच-नीच व नशे रहित समाज की सृजना का पक्षधर है।

सिख धर्म 'किरत करो, नाम जपो व वंड छको (समान वितरण)' के तीन सूत्रीय सिद्धान्त को सर्वोपरि समझता है।

सिख धर्म हर तरह के पाखण्डों व कर्मकाण्डों जैसे तीर्थ यात्रा, मूर्ति पूजा, व्रत, जन्त्र, मन्त्र व श्राद्ध आदि का खण्डन करता है ।

सिख धर्म में सदाचार, उच्च आचरण, सेवा व परोपकार आत्मिक विकास के साधन माने गए है।

सिख धर्म संघर्षमयी जीवन जीने व सफलता प्राप्त करने पर विश्वास रखता है। उत्साह व आनन्द सिख की जीवन युक्ति है ।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

- सिख धर्म गृहस्थ जीवन व सामाजिक मर्यादा में विश्वास रखता है, न कि त्यागी व वैरागी जीवन में। सिख धर्म प्रवृतिमूलक है, न कि निवृतिमूलक।

- सिख धर्म में नाम सिमरन, स्तुति व कीरतन आदि की आध्यात्मिक शक्ति को बहुत महत्तता दी गई है।

- सिख धर्म में मन को संयम में रखकर अकाल पुरख के आदेश (हुक्म) व उसकी इच्छा (रज़ा) को मानने को महत्तता दी गई है। इसके साथ यह भी धारणा है कि व्यक्ति अच्छे कर्मों व अरदास (प्रार्थना) से अपना भविष्य सुधार सकता है।

- सिख धर्म में स्त्रियों व पुरुषों के प्रति समान दृष्टिकोण अपनाया गया है, स्त्रियों को पुरुणों के समान अधिकार प्राप्त है।

- सिख धर्म पीड़ितों, शोषितों, दीन-दुखियों व ग़रीब लोगों के उत्थान के कार्य को पुण्य का कार्य समझता है।

- सिख धर्म सरबत के भले के लिए प्रयत्नशील है।

सिख

जो स्त्री या पुरुष एक अकाल पुरख, दस गुरु साहिबान (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिन्द सिंघ जी तक) श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी तथा दस गुरु साहिबान की बाणी व शिक्षा एवं दशमेश जी के अमृत पर विश्वास रखता है तथा किसी अन्य धर्म को नहीं मानता, वह सिख है।

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

पढ़ो व पढ़ाओ

गुरबाणी, सिख इतिहास, सिख जीवन प्रणाली, सिख धर्म व अन्य धर्मों से सम्बन्धित बहुपक्षीय व विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए गुरु गोबिन्द सिंघ स्टॅडी सर्किल के साहित्य व प्रकाशन विभाग की ओर से प्रकाशित की जा रही हिन्दी द्विमासिक पत्रिका -

सुचिन्तन

माडल टाऊन एक्सटैन्शन,

लुधियाना - 141 002

दूरभाष व फैक्स - 0161 - 450 352

द्विवार्षिक सदस्यता - 50 रुपये जीवन सदस्यता - 600 रुपये

SUCHINTAN

India's First Socio-religious, Cultural, Academic & non Political Hindi Magazine being circulated in all 25 States of India.

नोट - अन्य जानकारी के लिए उपर्युक्त पते पर सम्पर्क करें।

गुरबाणी, सिख इतिहास व सिख जीवन प्रणाली से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकें प्राप्त करने के लिए मिलें या लिखें।

सिख बुक सैंटर

माडल टाऊन एक्सटैन्शन, लुधियाना - 141 002

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com

ੴ वाहिगुरु जी की फतहि ।।

जागहु जागहु सूतिहो ।।

(श्री गुरु नानक देव जी)

सिंघो, सम्भलो व सम्भालो.!

(एक पुकार)

- सिख कौम को नशों से मिल रही निराशा से बचाओ।
- खालसा स्वरूप व चरित्र को नुकसान पहुंचाया जा रहा है, पंथ दर्दियों समय संभालो।
- बच्चों को पान खाने से रोको, नहीं तो वे जगत-जूठ तम्बाकू भी खाएंगे। यह पतित कर्म (पाप) है।
- बच्चों के केशों में कंघा व सिर पर दस्तार जरूर हो, नंगा सिर रखना अशोभनीय कर्म है।

कंघा दोनों वक्त कर पाग चुनैं कर बांधई ।

(भाई नन्द लाल जी)

- पंजाबी भाषा तुम्हें मां के दूध के साथ मिली है, इसे अपनी मां के समान प्यार व सम्मान दो।
- पंजाबी भाषा गुरुओं की भाषा है, इसे गुरुओं वाला प्यार व सम्मान दो।
- पंजाबी तुम्हारे देश-प्रेम का सबूत है, इससे मुंह तोड़ना देश से गद्दारी करना है। इसलिए पंजाबी लिखो, पंजाबी पढ़ो, पंजाबी बोलो तथा कभी-कभी इस भूली बिसरी मां के लिए बहुत नहीं तो चाय के प्याले जितना ही खर्च कर दो।

प्रार्थी :-

सिख बुक सैंटर

माडल टाऊन एक्सटैन्शन, लुधियाना - 141 002

Sri Satguru Jagjit Singh Ji eLibrary NamdhariElibrary@gmail.com